17.17 hrs.

DEMANDS FOR GRANTS 1982-83 (*Contd.*)

MINISTRY OF HOME AFFAIRS (*Contd.*)

MR. CHAIRMAN : We will now resume discussion and voting on the Demands for Grants relating to the Ministry of Home Affairs.

श्री एच० के० एल० भगत (पूर्वी दिल्ली): सभापति मेरा इरादा आज कोई मुकाबला कांग्रेस और पुरानी जनता पार्टी, जिसमें वाजपेयी जी भी मंत्री रह चुके हैं, से करने का नहीं था और न मैं उन बातों में जाना चाहता हूं जो पुरानी बातें हैं। हमें आज की स्थिति में गौर करना है। आज हमारे देश में और देश के बाहर और चारों तरफ स्थिति क्या है, उसको देखते हुए, इस सदन में हम लोगों को सोचना चाहिए कि क्या किया जाए। मैं समझता हूं कि उस अन्दाज में आज हमें बात करनी होगी। आज कोई स्थिति पैदा होती है, तो उस स्थिति के मुताबिक पार्लियामेंट के मैम्बरों को, सरकार को और विरोधी दलों को और देश की जनता को सोचना होता है और एक बड़े परस्पेक्टिव में बात को सोचना होता है। मैं इस ख्याल से इस डिबेट में कुछ बोलना चाहता था।

अभी हमारे विदेश मंत्री जी ने हमें बताया कि हमारे पड़ौसी देश में क्या हुआ। उसको एक तरफ करके मैं कहना चाहता हूं और मेरा यह एसेसमेंट है कि हमारे देश को साम्राज्यवादी शक्तियां मिलिट्रीली एनर्सकिल करने की चारों तरफ से कोशिश कर रही हैं। इसको हम सब जानते हैं और यह भी सब मानते हैं कि हमारे लिये और दुनिया के लिए एक बड़ी भारी खतरे की स्थिति पैदा हो रही है। उस सूरत में हमें अपने घर में पहले से ज्यादा मजबूती रखने की जरूरत है और उसमें बातचीत का तरीका कटुता का नहीं होना चाहिए। डिफ्रेंसेज डैमोक्रेसी में होते हैं, पार्लियामेंट फोरम में होते हैं और मैं वाजपेयी जी का बहुत आदर करता हूं। वे बहुत सयाने और सुलझे हुए नेता हैं लेकिन आज जिस प्रकार का उन्होंने भाषण दिया, उसकी आशा मैं उनसे नहीं करता था। जो भाषण उन्होंने किया, उसके बारे में मैं यह कहना चाहता हूं कि सन् 1980 में जनता ने बड़े भारी बहुमत से हम को जिताया लेकिन आप विचार कीजिए कि उस भारी वेव में देश के जो अपोजीशन के बड़े स्टालवर्टस थे, उनको भी उसने चुनवा दिया। बहुमत हमें दे दिया लेकिन देश के बहुत से स्टालवर्टस को उन्होंने चुनवा दिया क्योंकि जनता ने सोचा कि डैमोक्रैसी में अपोजीशन भी बहुत जरूरी है और उनके बड़े नेताओं को चुन लिया। मैं इस बात को ईमानदारी से कह रहा हूं कि जहां डैमोक्रैसी में सरकारी पार्टी का महत्व होता है, उस से कम महत्व अपोजीशन का नहीं होता है। अगर सरकारी पार्टी में कमजोरी आती है, तो देश का नुकसान होता है और अगर अपोजीशन में कमजोरी आती है, तो देश का नुकसान होता है। अगर अपोजीशन कोई ऐसी गलत बात करता है, तो देश का नुकसान होता है। बाहर क्या एक्रोबेटिक एक्सरसाइजेज की जा रहीं हैं। वाजपेयी जी, हमें बता रहे थे कि मुख्य मंत्री के साथ यह हो रहा है और वह हो रहा है।

मैं उस बात पर नहीं जाना चाहता कि अपोजीशन में क्या हो रहा है, कैसी-कैसी एक्रोबैटिक एक्सरसाइजिज करके अपोजीशन के नेता अपनी इमेज बिगाड़ रहे हैं। लेकिन

यह बात सही है कि जिससे देश का नुकसान होता हो वह काम हमको नहीं करना चाहिये। हाउस में भी अपोजीशन इज बिदरिंग अवे। आप जोर से बहस कर लें चर्चा कर लें, दलीलें दे लें कोई रोकता नहीं है। आप बहुत योग्य हैं, बहुत अच्छा बोलने वाले हैं। अच्छी बात आप कह सकते हैं, जोर से कह सकते हैं। लेकिन सवाल यह है कि जब देश में ऐसी स्थिति हो उस समय हमें क्या करना चाहिये। गृह मंत्री का काम एक तरह से गृहणी की तरह होता है। जिस तरह से हाउसवाइफ को घर को सम्भालना पड़ता है उसी तरह से गृह मंत्री को देश को सम्भालना पड़ता है। बच्चे अच्छे भी होते हैं, शरीर भी होते हैं, नटखट भी होते हैं। सब को उसको देखना पड़ता है और घर में जो प्राबलैम्ज पैदा होती हैं उनको हल करना पड़ता है। इसी तरह से देश में लोग तरह-तरह की प्राबलैम्ज पैदा करते हैं और होम मिनिस्टर को उसको देखना पड़ता है.....

श्री मनी राम बागड़ी (हिसार) : हाउस-वाइफ हैं?

श्री एच० के० एल० भगत : बिल्कुल हाउसवाइफ की तरह गृह मंत्रालय भी है मुश्किल यह है कि गृह मंत्री जी को, जैल सिंह जी को छोटे-छोटे बच्चों से नहीं बल्कि बड़े-बड़े बच्चों से, बागड़ी जी की तरह के बच्चों, बड़े नटखट बच्चों से डील करना पड़ता है। गम्भीरता से आप सोचें कि हम क्या कर रहे हैं। क्या ज्ञानी जी को आप सैक्युलरिज्म सिखायेंगे; यह बताएंगे कि कास्टिज्म के खिलाफ किस तरह से लड़ना चाहिये, उनको देश भक्ति सिखाएंगे उनको ईमानदारी, मेहनत और हिम्मत सिखाएंगे? ज्ञानी जी के जीवन की एक एक सांस देश की आजादी के लिए खपी है, सैक्युलरिज्म के लिए सर्फ हुई है। कास्टिज्म के खिलाफ वह हमेशा लड़ते रहे हैं कुछ भाई ऐसे हैं जिन्होंने उन पर तानाकशी की है। मैं कहना चाहता हूं कि उनका नाम इतिहास में उस समय कोई नहीं जानता था जब वह मैदान में उतरे थे। आज इस प्रकार से होम मिनिस्टर पर परसनल और चीप जैब्ज कुछ लोगों ने किए हैं। मैं उन में जाना नहीं चाहता हूं। उन में जाने की जरूरत भी नहीं है। मैं तो उनके सामने बड़ा छोटा सा बच्चा हूं। वह मुझ से बहुत सीनियर हैं। आप उनकी सेवा को न मानें लेकिन मैं मानता हूं। सीनियरटी को भी मानता हूं। पहले भी मानता था और आज भी मानता हूं। उसके सामने अपना सिर झुकाता हूं। आप उसको भूल जाएं, मैं भूल नहीं सकता हूं।

आज देश के सामने जो स्थिति है उसको आप देखें। उस में हमें क्या करना चाहिए? फिरकापरस्ती का मसला है, कास्टिज्म का मामला है, डकैतों का मामला है। एक भाई कह रहे थे कि छवि राम मरा और उनके शरीर पर एक भी आदमी थूकने के लिए तैयार नहीं हुआ। यह भी सरकार का कसूर हुआ। परसों डी. पी. यादव साहब कह रहे थे कि छविराम को सरकार ने मार दिया और सरकार ने कहा लोगों को इसकी लाश पर थूको—मुझे नहीं पता सरकार ने ऐसा कहा था या नहीं कहा—लेकिन कोई थूकने के लिए आगे नहीं आया और लोग उसको नेता जी कहते थे। आप सोचें कि हम कहां जा रहे हैं।

वाजपेयी जी ने कहा कि दिल्ली को असैम्बली देने का वायदा किया गया था और इसको निभाना पड़ेगा। मैं चाहता हूं कि इसको निभाया जाए। दिल्ली में

[श्री एच. के. एल. भगत]

मल्टीप्लिसिटी आफ आथोरिटीज हैं। सबसे बड़ी मुसीबत यह है कि अस्पताल सेंटर के भी हैं, कारपोरेशन के नीचे भी हैं, हकूमत के नीचे भी हैं लेकिन तीनों में कोई ताल मेल नहीं है। दूध की दो-दो एजेन्सीज हैं लेकिन दोनों में कोई ताल मेल नहीं है। एक दर्जन आथोरिटीज के नीचे एक-एक चीज है और एक-एक दर्जन मिनिस्टरीज के नीचे है। मल्टीप्लिसिटी आफ मिनिस्ट्रीज, मल्टीप्लिसिटी आफ आथोरिटीज, मल्टीप्लिसिटी आफ एजेंसीज यहां हैं for greater gain of Delhi सेंट्रल गवर्नमैंट, दिल्ली से प्यार करती है। प्रधान मंत्री जी ने, केन्द्र ने दिल्ली को बहुत पैसा दिया है। बड़ी उसकी दिल्ली से हमदर्दी है। मदद भी उसकी वह बहुत करती हैं। मैक्सिमम पर कैपिटा खर्च होता है यहां पर। दिल्ली मेरी ही नहीं है। सौभाग्य से मैं दिल्ली की नुमाइंदगी करता हूं। लेकिन दिल्ली सारे देश की है। सारे राष्ट्र की ही नहीं बल्कि यह एक अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र बन गया है। दिल्ली की सारे देश की जिम्मेदारी है। आप सब की दिल्ली है। पिछले एक दो सालों में दिल्ली में क्या काम डिवैलेपमेन्ट के हुए हैं उन में मैं जाना नहीं चाहता। बहुत काम हुआ है। लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि नौकरशाही के हाथों जितना खर्च हुआ है अगर वह उसके हाथ से न हुआ होता तो बहुत ज्यादा फायदा होता। रूलिंग पार्टी से लोग ज्यादा खुश होते। मैं सफाई के साथ ज्ञानी जी से कहना चाहता हूं एक बात। वाजपेयी जी ने कहा अभी क्यों नहीं किया। मैं उनको याद दिलाना चाहता हूं कि आपकी पार्टी ने ने भी वादा किया था कि विधान सभा देंगे। ढाई साल आपने वादा पूरा नहीं किया। आप बिल नहीं लाए। हम ने वादा किया। अभी तक हमने भी पूरा नहीं किया। यही दिल्ली का मर्ज है, सिन है। मैं इसको मानता हूं कि देनी चाहिए। यह वादा भी आपने भी पूरा नहीं किया, हमने भी अभी तक पूरा नहीं किया। करना चाहिए। मैं गृह मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि दिल्ली के लोगों की यूनानिमस डिमान्ड है, सारी पार्टियों की डिमान्ड है, रूलिंग पार्टी की और कांग्रेस एम० पीज० की डिमान्ड है कि दिल्ली को असेम्बली देनी चाहिए एडीकेट पावर्स के साथ।

माननीय वाजपेयी जी कह रहे थे कि लेफ्टीनेंट गवर्नर दूसरों के इलाके में घूमते हैं, उन्हें नहीं पूछते। हमें तो खुशी होगी नई दिल्ली में घूमें। आप आल इंडिया लीडर हैं, आपको फुर्सत कहाँ हैं? नई दिल्ली वैसे ही सैन्ट्रल गवर्नमेंट का ड्राइंग रूम है। एशियाड की वजह से और भी सुन्दर हो रही है। मुश्किल तो हमारी है। गृह मंत्री जी आपने कमेटी बनायी शाहजहानाबाद को डेवलप करने के लिये और उनकी क्या मुश्किलात हैं उनको हल करने के लिए। बड़ा अच्छा किया। लेकिन सारी दिल्ली में बहुत सी प्रोबलम्स हैं। ब्यूरोक्रेसी भी डेमोक्रेसी का पार्ट है और उसमें अच्छे लोग भी हैं, मैं सब को बुरा नहीं कहता हूं, लेकिन ब्यूरोक्रेसी कोई सब्स्टीट्यूट नहीं है। डेमोक्रेसी या चुने हुए लोगों का। 2 साल गुजर गये सलाह मश्विरा होते। मैं कहना चाहता हूं कि आप इंस्टीट्यूशनल अरेंजमैंट कीजिए और लोगों पर भरोसा कीजिये, दिल्ली के एम० पीज० पर भरोसा कीजिये। उनको अधिकार दीजिये और मल्टीप्लीसिटी को खत्म कीजिए जिससे दिल्ली की हालत सुधरे।

वाजपेयी जी ने वायदों की बात कही। एक तो आपने असेम्बली की कही, वाजपेयी

जी की पार्टी ने कहा था कि अगर चुनाव नहीं हुए तो सत्याग्रह करेंगे। दूसरी मांग है दिल्ली में सेल्स टैक्स खत्म करो। वाजपेयी जी की पार्टी ने कहा था सेल्स टैक्स खत्म करेंगे। लेकिन हमने कहा था कि एग्जामिन करेंगे। हमारी सरकार ने तय कर दिया कि 5 आइटम्स पर खत्म होगा, उसके लिए स्वर्गीय सुखाड़िया जी की चेयरमैनशिप में कमेटी बनी थी। अब श्री कमलापति त्रिपाठी उसके चेयरमैन हैं। तो हमने जो कहा वह कर रहे हैं फिर भी गिला हमको दे रहे हैं। इसी तरह से रीसेटिलमेंट कालोनीज में ओनरशिप देने की बात थी। हमने 1977 में राइट दिये, लेकिन मोरार जी भाई ने उसको खत्म कर दिया श्रीमती इन्दिरा गांधी ने फिर दे दिये। फिर भी यह कह रहे हैं कि आन्दोलन करेंगे। आपने कहा हमने प्रस्ताव पास किया, बड़ा अच्छा किया। गुजरात रिज़र्वेशन ऐजीटेशन में आपने अच्छा काम किया आप उसमें शरीक हुए, आपने यहां प्रस्ताव पास किया लेकिन गुजरात आन्दोलन के दौरान, असम आन्दोलन के दौरान आपकी पार्टी और आर० एस० एस० ने क्या किया? मेरी बात आप छोड़ दीजिये। बी०जे०पी० को छोड़ कर बाकी सब पार्टीज़ के एम० पीज० से आप पूछ लें, सब आपको कंडेम करेंगे। आपकी पार्टी की कथनी और करनी में फ़र्क रहा है। आपकी पार्टी का कहना कुछ है और करना कुछ है। आपने कहा हम सहयोग दे रहे हैं। मैं पूछता हूं कि रास्ता रोको आन्दोलन किसने चलाया? कौन लोग हैं जिन्हों ने किसानों को कहा कि अनाज न दो सरकारी गौडाउन में? किसने अनाज स्कीम के डिस्ट्रिब्यूशन को सबोटाज करने की कोशिश की? अपोज़ीशन में बड़े योग्य लोग हैं, स्टालवार्ट हैं, बहुत मुश्किल हालात में लोगों ने आपको चुनकर भेजा है। आपका फर्ज हो जाता है कि आप सरकार से अच्छी बात कहें, अच्छी सलाह दें, कंस्ट्रक्टिव आल्टरनेटिव बतायें। इस सदन में आपने कहा नेशनल कंसेन्शस की जरूरत है। ठीक है, मैं मानता हूं, लेकिन यह तभी मुमकिन है जब आप और हममें सही नीयत होगी। आप कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं। फिर ऐसी हालत में कैसे कंसेन्शन डेवलप हो सकता है। यह समय एकता और मिलने का है, कटुता का नहीं।

जम्मू कश्मीर के लिये वहां के लोगों ने और हिन्दुस्तान के लोगों ने मिल कर खून दिया था। हमें गर्व है कि नेशनल कानफ़रेंस के कार्यकर्ताओं ने, उनके नेता शेख अबदुल्ला ने उस समय किस तरह सैक्यूलरिज्म के लिये कुरबानी की। हमें गर्व है, वह हमारे भारत का हिस्सा है। कटुता को कम करना है, मिलाना है, इकट्ठे होना है, चीजों का मुकाबला करना है, संघर्ष करना है, देश को अन्दर से मज़बूत करना है।

17.30 hrs.

[MR. DEPUTY SPEAKER in the Chair]

आज हमारी प्रधान मंत्री बाहर गई हैं। दुनियां भर में क्या भारत की इमेज है? यह तो आप जानते हैं। मैं नहीं जानता कि आपके जमाने में क्या थी? लेकिन हमको इस इमेज को ताकत के साथ, भारत की अन्दरूनी मज़बूती को प्रेम से, मेल से, इकट्ठे होकर मज़बूत करना चाहिये।

हमारे ज्ञानी जी की कोई खूबी यह नहीं है कि वह माइनोरिटी से हैं, लेकिन बड़ी बात यह है कि हिन्दुस्तान का होम मिनिस्टर माइनोरिटी से है और आर्टिज़न क्लास से है, जिसके दिल में गरीबों के लिये दर्द है। आप उनको तानाकशी करिये, निन्दा करिये, क्रिटिसिज्म कीजिये, लेकिन ईमानदारी से को-आपरेशन दीजिये।

[श्री एच. के. एल. भगत]

मैं हालात को समझता हूं, चेलेन्जिग सिचुएशन थी, चेलेन्जिग आज भी है, बहुत कुछ सुधरी है, सुधर रही है और भी सुधर सकती है, मिलकर हमें देश को मज़बूत करना चाहिये।

इन शब्दों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं।

श्री मनीराम बागड़ी (हिसार): उपाध्यक्ष महोदय, वैसे भाषण की जरूरत नहीं थी क्योंकि आज सारी बातें आ गई हैं। मैं एक बात सारे सदन के सामने रखना चाहता हूँ कि जनतंत्र में बोली की स्वतंत्रता होती है, हिंसक काम की नहीं, सत्याग्रह की जनतंत्र में स्वतंत्रता होती है। सत्य और अहिंसा के बगैर जनतंत्र चलता नहीं है। ज्ञानी जी, आप लाव-लश्कर के साथ बैठे हैं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: लश्कर तो उधर है, लाव किधर है?

एक माननीय सदस्य: ला तो कौशल के पास है, आर्डर प्राइम मिनिस्टर के पास है।

श्री मनीराम बागड़ी: ज्ञानी जी, मेरी बातों का असर इसलिये नहीं है कि कोई मैं बड़ा आदमी हूं या आप कोई अज्ञानी या कम समझते हैं। आप उम्र में बड़े हैं, ओहदे में बड़े हैं और ज्ञान में भी ज्यादा हैं, लेकिन वाणी के बारबार कहने से, हर आदमी की वाणी से सत् बात निकलने से कुछ उसका विचार चलता नहीं है। जो जात और धर्म की मज़हब की बात करते हैं, उनके लिये दो बातें मैं कहता हूँ।

जात-पांत, छूत-छात और ना-बराबरी का इलाज धर्म-परिवर्तन नहीं है, और धर्म-परिवर्तन को रोकने का इलाज धर्म बताओ नहीं, बल्कि जात-पांत और भेद-भाव को मिटाने का इलाज शांतिमय संघर्ष, सत्याग्रह और संगठन है। धर्म बचाओ की बजाय, जो धर्म बचाओ की बात करते हैं वह ना-बराबरी हटाओ और समानता लाओ का पथ हो सकता है। घृणा से घृणा मिटेगी नहीं, बल्कि बढ़ेगी। यह देश गांधी और गौतम का है।

दूसरी बात मैं आपके सामने थोड़ी सी कड़वी कहना चाहता हूं। विरोधियों के पास सिवाय बोली के और कुछ नहीं होता और सरकार के पास बोली भी है और गोली भी है। बोली को ज्यादा इस्तेमाल न करें और गोली को कतई इस्तेमाल न करें तो जनतंत्र ज्यादा होता है और बोली को सहन करें। जम्हूरियत की बुनियाद को आप समझलें। बंगला देश में फौजी सरकार की बात आपके सामने आई है।

(व्यवधान)

ज्ञानी जी, जरा दिमाग से समझिये। व्यक्तियों से मेरा कोई मतलब नहीं है। दिमाग है, दोनों एक ही घर से निकले हैं, बहुगुणा जी भी आपके साथ थे, चुनाव कांग्रेस के अन्दर लड़ा, दिमाग है। वह जीते, जीतने के बाद जब कांग्रेस छोड़ी तो चुनाव छोड़ा। आपका दिमाग, हरियाणा में, हिमाचल में चुनकर आये जनता पार्टी की तरफ से और आप ले बैठे हैं कांग्रेस पार्टी में। यह तो दिमाग से सोचने की बात है।

आप इस दिमाग को रोकिये मत, कि दल-बदल को सिद्धान्त-विहीन मानो। यह बात मानकर चलें कि बहुगुणा जी ने गलती चाहे तब की हो जब आपके साथ मिलकर चुनवा लड़ा, या गलती अब की है।

श्री राजेश पाइलेट (भरतपुर) : बागड़ी जी, आप कौनसी टिकट से जीते और अब कहां हैं ?

श्री मनी राम बागड़ी : मैं जनता पार्टी के टिकट और सिम्बल पर चुनाव लड़ा था और जनता (एस) पार्टी में हूं। सबने दल बदले हैं। मैं वहीं पर मौजूद हूं।

मैं तो चाहता हूं कि हमारे नौजवान लड़के आगे बढ़ें और कुछ करें। ये तो चले हुए कारतूस हैं, जाने वाले हैं। आप श्री कमलापति त्रिपाठी से सीखा करो।

श्री बहुगुणा हमारी पार्टी के अध्यक्ष हैं। दो दिमाग हैं। एक दिमाग तो यह है कि चुना हुआ मैम्बर इतीफा दे देता है और चाहता है कि डेमोक्रेसी शुद्ध हो, अगर उसने गलत कदम उठाया है, तो जनता उसके खिलाफ वोट देकर अपनी राय जाहिर करे। अगर श्री बहुगुणा जीत कर आते हैं, तो आपको अपनी नीतियों को सुधारने का मौका मिलेगा।

बंगलादेश की घटना एक खतरे की घन्टी है। कोई अभागा आदमी होगा, जो अपने देश में जनतन्त्र की हत्या चाहता हो। जिस दिन जनतन्त्र खत्म होगा, उस दिन पक्ष और विपक्ष को छांट कर गोली नहीं मारी जाएगी बल्कि गोली सब के सीने को पार करेगी।

अब मैं सिर्फ पायंट्स रखता हूं। मण्डल कमीशन की रिपोर्ट को यहां पर रखा जाए। चुनाव जल्दी कराए जाएं। भ्रष्टाचार को समाप्त करना चाहिए। अगर गंगोत्री से ही गंगा भ्रष्ट होकर आएगी, तो रास्ते में उसकी सफाई क्या मानी रखेगी ? इसलिए गंगोत्री पर ही सफाई करनी चाहिए।

पुलिस और डाकू में अन्तर क्या है ? डाकू बगैर कानून के आदमी को मारता है। अगर पुलिस भी बगैर कानून के लोगों को मारती है, तो वे दोनों कातिल हैं, वह दोनों डाकू हैं—एक सरकारी डाकू है और एक गैर सरकारी डाकू है। इस हालत में देश का भला नहीं होगा। किसी को भी सजा कायदे-कानून के मुताबक मिलनी चाहिए। हमारा देश कायदे-कानून का देश है, यह कोई जंगल नहीं है, इसलिए यहां पर सब काम कायदे-कानून के मुताबिक होना चाहिए।

*SHRI ERA MOHAN (Coimbatore) : Hon. Mr. Deputy-Speaker, Sir, on the Demands for Grants of the vital Ministry of Home Affairs, many distinguished leaders of political parties and senior Members of this House had expressed their view-points. At the fag end of the discussion, as the junior-most Member of this House I consider it my privilege and honour to say a few words on these important Demands for Grants.

The Hon. Members of this House who preceded me suggested several steps for eradicating all-enveloping corruption in the country. The Hon. Ministers who intervened in the Debate enumerated the effective steps being implemented by the Government to root out the scourge of corruption. The revered Prime Minister and the Hon. Home Minister have on numerous occasions stressed the need for cleansing the society, as otherwise all the developmental activities will be just a superstructure on the quicksand. Inspite of all-out efforts through statutes and administrative fiats, the people who are at the source—I would even say those who are at the seed-bed—manage to extricate themselves from the clutches of law. I would take this opportunity to give an example so that the Hon. Home Minister formulates proposals to take even pre-emptive action against such people.

*The Original speech was delivered in Tamil.

[Shri Era Mohan]

Some months back the D. M. K. Members of this House, the Muslim League Members, the Congress-I Members from Tamil Nadu and the Janata Party Member Shri Subramania Swamy presented a petition charging the Chief Minister of Tamil Nadu with serious malpractices in the award of contrast for wholesale and retail distribution of Indian-made foreign liquor in Tamil Nadu to the Hon. Minister of Home Affairs and also to the Hon. Prime Minister. A similar petition from the D. M. K. M.L. As, Muslim League M.L. As, Congress-I M.L. As, of Tamil Nadu Legislative Assembly was also presented to the Hon. Prime Minister. This petition was sent to the Chief Minister of Tamil Nadu for his comments. I am sure that the Hon. Home Minister will be having the date on which this petition was sent to the Chief Minister of Tamil Nadu. As soon as the petition reached him, the Chief Minister of Tamil Nadu did an unprecedented thing.

An Inquiry Commission is constituted if the matter is of public importance and if even on a cursory perusal there is a prima facie case for the appointment of such an Inquiry Commission. The Chief Minister of Timil Nadu was caught between the devil and deep sea. He must have become apprehensive that these charges might also be referred to the Ray Commission appointed by the Centre to probe into the spirit scandal. Immediately, be constituted a one-man Commission headed by retired Judge of Madras High Court, Justice Ramamurthy. The terms of reference of this Commission were charges levelled by us against him and his cabinet colleague. He directed the Police Department to extend all help to the Commission in its inquiry. You can imagine how far the Police Department will be helpful to the Commission, which is to enquire into the charges against the Chief Minister of Tamil Nadu, particularly when the Chief Minister himself is in charge of the Police Department.

I would like to bring to the attention of the Hon. Home Minister the extract from the Judgment of Shri Chandrachud, presently the Chief Justice of Supreme Court, in a similar case called Karnataka v. Union Government.

> "It is hardly ever possible, except in utopian conditions that the State Government will appoint a Commission to inquire into acts of corruption, favourtism and nepotism on the part of its Chief Minister. It is interesting that Sir Thomas More coined the name 'Utopia' from the Greek OU (not) and TOPS (place) which together men "No Place.". It is inconceivable that a Commission of Inquiry will be appointed by a State Government without the concurrence of the Chief Minister and if the political climate is so hostile that he is obliged to submit to an inquiry into his own conduct, he will quit rather than concur. Indeed, a Council of Ministers which considers that the conduct of its Chief Minister and some of the Ministers requires examination in a public inquiry, shall have forfeited the confidence of the legislature and would ordinarily have to tender its resignation."

I would like to raise this important issue whether after the constitution of such a Commission of Inquiry to enquire into charges against himself the Chief Minister should be allowed to continue in his position. Secondly, I would like to hear from the Hon. Minister of Home Affairs as to what steps he proposes to take against such persons, irrespective of the position they are occupying, who try to circumvent the laws of the land.

गृह मंत्री (श्री जैल सिंह)। डिप्टी स्पीकर साहब, गृह मंत्रालय के इस विभाग की मांगों को सामने रखकर सदन में तीन दिन से बहस हो रही है। मैं उन सब मैम्बरों का, जिनके नाम 50 से ऊपर चले गए हैं. बहुत मशकूर हूं। उन्होंने खुले दिल से अपनी बातें कहीं। उनके विचार वैसे भी रिकार्ड में आते हैं, लेकिन मैंने भी नोट किए हैं। आप जानते हैं कि पोलिटिकल पार्टीज में कुछ मजबूरियां भी होती हैं। इस डैमोक्रेसी में पोलिटिकल पार्टी जो बनती हैं, उनके अपने नियम होते हैं, उनका अपना अनुशासन होता है, उनको निभाने के लिए कुछ बातें अपोजीशन को करनी पड़ती हैं, ताकि वे अपना विरोध प्रकट कर सकें। इस बात का मैं उनको कन्सैशन देता हूँ। हालांकि, वे दिल से हमारे खिलाफ नहीं है। उन्होंने कुछ तामीरी सुझाव दिए हैं और कुछ क्रिटिसिज्म किया गया है। कुछ बातों की श्लाघा की गई है और निन्दा भी की गई है। निन्दा करने वालों के प्रति मेरे मन में नाराजगी नहीं है। उनके ख्याल में जो कमियां थीं, उनको हम दूर करने की कोशिश करेंगे। कुछ खूबियों की उन्होंने प्रशंसा की है, इसके लिए भी मैं उनका मशकूर हूं। उन्होंने अच्छे कामों की कदर की है और एक दूरंदेश की बात कही है।

मैं विश्वास रखता हूं कि डैमोक्रेटिक सैट-अप में खुली बात कहने का मौका मिलना चाहिए और उस पर सत्तारूढ़ पार्टी को खुले दिल से सुनना चाहिए, क्योंकि मुझे इस बात की हमदर्दी है कि विरोधी दल के नेता होते हैं, उनके हाथ में सिर्फ बोलने के अलावा कुछ नहीं होता है। यदि बोलने का मौका न दिया जाए तो बहुत बेइन्साफी होगी। मैं बेइन्साफी नहीं करना चाहता हूँ। बेशक वाजपेयी जी ने कहा था कि आप अपोजीशन में रहे हैं, सही बात उन्होंने कही और मैं अपने आप को खुशकिस्मत समझता हूं। सन 1947 के बाद, अपोजीशन में आए नहीं थे। आए तो हमें भी सबक मिला और बहुत कुछ सीखा हमने और शायद आप भी बहुत कुछ सीखेंगे। लेकिन आप तो सीखे हुए हैं और पहले भी यहीं बैठे हुए थे।

उपाध्यक्ष महोदय, मुझे इस बात का भी ऐहसास है कि मैं उन मैम्बरों की तकरीरों का भी जिक्र करूं, जिनकी तकरीरें बजट के साथ या गृह मंत्रालय के साथ ताल्लुक नहीं रखती हैं, लेकिन इलैक्शन के प्वाइन्ट-आफ-व्यू से की गई थी, ताकि इलैक्शन जीतने के काम आए और यहां से पब्लिसिटी मिले। उनका जवाब भी कुछ न कुछ तो देना ही पड़ेगा। मैं इस बात का परहेज करूंगा और मैं पुरानी जनता पार्टी की सरकार का और छः महीने की लोकदल की सरकार का बहाना लेकर अपनी कमियों को ढांपने की कोशिश करूं यह मैं नहीं करूंगा। चूंकि मुझे इस बात का एहसास है कि कुछ दोस्त बेचारे उसी गवर्नमेंट में आ गए, लेकिन हकीकत में हमारे कांग्रेसी थे। प्रधान मंत्री भी कांग्रेसी और दो उप-प्रधानमंत्री भी कांग्रेसी और वह भी एक कांग्रेस की सरकार थी, लेकिन नाम नहीं रखते थे। लेकिन अब थोड़ी हिम्मत आई है, नाम खुल कर रखते हैं और जब चाहते हैं तब बदल लेते हैं। अगर ये पहले भी करते तो ज्यादा अच्छा था।

श्री चन्द्रजीत यादव (आजमगढ़) : ज्ञानी जी आज कुछ अच्छे मूड में मालूम हो रहे हैं।

श्री जैल सिंह : मैं अच्छे मूड में हूं, यह मैम्बरों की मेहरबानी है। उन्होंने अच्छी तकरीरें की हैं और मैं उनकी श्लाघा करता हूँ।

[श्री जैल सिंह]

हमारे जेठमलानी जी बेहतरीन लायर हैं। मैंने "लयर" नहीं कहा है, "लायर" कहा है···

श्री मनीराम बागड़ी : की-आख्या, तुसी।

श्री जैल सिंह : मैं इनको बहुत अच्छा एडवोकेट समझता हूं, बहुत अच्छा वकील समझता हूँ। उन के प्रति मेरे मन में बहुत इज्जत है, लेकिन उनकी जो तकरीर थी, वह इस तरह से कर रहे थे जैसे किसी मुजरिम को, स्मगलर को, अपील के अन्दर रिहा कराना हो। मुझे जेठमलानी जी की लियाकत पर बहुत भरोसा है, चूंकि 1939 से लेकर 1944 तक हम तो जेल में रहे और जेठमलानी जी उस वक्त ला पढ़ रहे थे, इसलिये उनकी लियाकत ज्यादा हो ही सकती है और परमात्मा की मेहरबानी से इनको देश की आजादी के लिये कुछ नहीं करना पड़ा। उन्होंने अच्छी बातें भी कहीं हैं, वे भी हम ने नोट की हैं, गुस्सा मन में नहीं आया, लेकिन हैरानी भी दिल में हुई··

SHRI RAM JETHMALANI (Bombay North-West) : How badly informed you are !

ज्ञानी जैल सिंह : इतने लायक दोस्त हैं लेकिन दोनों राज्य मंत्रियों और मेरे खिलाफ भी कह गये। बात मंत्रालय की हो रही है, बात डिपार्टमेन्ट की हो रही हैं, बात नीतियों की हो रही है, बात अच्छी और बुरी दोनों बातों की हो रही हैं, वहां पर हमारे "पर्सन" के बारे में बात करने का क्या फायदा था। अच्छे वकील को यह शोभा नहीं देता है। लेकिन मैंने यह सोचा—जब उन्होंने यह कहा कि होम मिनिस्टर उर्दू के शेर पढ़ कर हम को सुना देते हैं, तो मैं जेठमलानी जी को क्या कहूं—दुनिया में चित्रकारी, गायनकारी और शायरी कोमल गुण हैं, ये उनके पास होते हैं जिनका दिमाग बहुत होशियार हो, शार्प हो। बहुत से विरोधी दलों के नेताओं ने मुझे कई बार कहा है कि अब शेर पढ़िये। मैं समझता हूं कि कम से कम शेर हों। शेर को कभी इस लिये भी पढ़ना पड़ता है कि आप जैसे दोस्त जब गुस्से में आयें तो थोड़ा ठण्डा कर दूं। शेर की एक खूबी यह है कि जो बात आप अभी कहते हैं फिर दूसरी बात दो घन्टे बाद कहते हैं, तो शेर वह बातें एक ही सूत्र में कह देता है। एक जमाने में, हमारे वेद-शास्त्रों में लिखा है, ऋषि-मुनि जब सूत्र तैयार करते थे तो जब उनका सूत्र परवान हो जाता था तो उनको इतनी खुशी होती थी जैसे उनके घर बेटा पैदा हुआ हो। मैं नहीं कह सकता, वाजपेयी जी····(**व्यवधान**)

वाजपेयी जी सत्कार-योग पार्टी के प्रधान हैं, मैं उनकी बहुत इज्जत करता हूं। लेकिन मैं यह कहता हूं—जेठमलानी जी बहुत अच्छे एमिनेन्ट वकील गिने जाते हैं और हैं भी, जो झूंठे आदमी को भी छुड़वाने की शक्ति रखते हैं, जिनकी साधुओं को भी जरूरत पड़ती है, सन्तों और स्मगलरों को भी जरूरत पड़ती है···

श्री राम जेठमलानी : कांग्रेसियों को भी पड़ती है।

ज्ञानी जैल सिंह : कांग्रेसियों में भी कोई ऐसे हो सकते हैं जो स्मग्लिग करते हों, लेकिन हम उन को कांग्रेस में रखते नहीं हैं····(**व्यवधान**)·····

वाजपेयी जी को मैं कुछ नहीं कहता हूं, वे उन को इज्ज़त दें, अपनी पार्टी में रखें, यह आप का काम है, लेकिन मैं एक बात

कहता हूं—जेठमलानी जी जो भी बात कहते हैं मैं मान लेता हूं, मगर खलके-खुदा तो कुछ और ही कहते हैं, बम्बई की गलियों में जा कर पूछिये आप के मुताल्लिक क्या विचार-धारा लोग रखते हैं।

आप के मुताल्लिक क्या विचारधारा लोग रखते हैं, उस को देखिये और उन बातों को ध्यान में रखते हुए जरा बोलिये जरूर मगर शीशे के महल में बैठ कर पत्थर से लड़ाई नहीं की जा सकती।

श्री राम जेठमलानी : आप मेरे साथ उन गलियों में चलिए और लोगों से पूछ लीजिए।

श्री जैलसिंह : आप के साथ जा कर ईट खायेंगे और क्या होगा। वाजपेयी जी उस समय यहां नहीं थे। अगर होते तो जरूर रोकते। आप की तकरीर बहुत शानदार हुई थी लेकिन आखीर में जा कर सब खराब कर दिया। खैर, हम तो उसको भूल गये और हम अपने मन में ऐसी बातें नहीं रखते।

विरोधता करने वालों ने जो विरोधता के नुक्ते दिये हैं, उनका मैं एक एक का जवाब नहीं दे सकता क्योंकि उस में समय बहुत ज्यादा लग जाएगा। मैंने समेराइज किया है कि वे क्या हैं। कानून व व्यवस्था की हालत बिगड़ रही है और लोग सुरक्षित महसूस नहीं करते। दूसरा सरकार डिकटेटराना रवैया इस्तेमाल कर रही है और डैमोक्रेसी की घातक यह सरकार है। हरिजनों और पिछड़ी श्रेणियों के लोगों पर अत्याचार बढ़ रहे हैं और सरकार उनको सुरक्षा देने में असमर्थ रही है। कम्युनल फिजा बिगड़ रही है और देश की एकता की भावना खत्म हो रही है और अलहदगी की भावना बढ़ रही है। यू०पी० के एक एनकाउन्टर में बेक-सूर लोगों को मारा गया आदि आदि।

ये चीजें जो तकरीरें हुई हैं, उनमें आई है। मैं यह गिनती करता हूं कि ला एण्ड आर्डर की पोजीशन की जो बात है, वह एक बुनियादी बात है। जिस कौम में, जिस कन्ट्री में इन्सान की जिन्दगी और उस के माल की रक्षा करने में सरकार कामयाब नहीं होती, तो वह मुल्क तरक्की नहीं कर सकता और उसको हमेशा खतरा रहता है। इसके लिए मैं चाहूंगा कि आपको भी को-आपरेशन मिले। यह मामला केवल पालीटिकल नहीं है। ला एण्ड आर्डर को सुधारने के लिए और उसके कारणों को जानने के लिए यह निहायत जरूरी है कि यह सोचा जाए कि ये क्यों हुए हैं। एक जमाना आया और उस जमाने से ला एण्ड आर्डर की पोजीशन गिरती गई। वह कौन सा जमाना था? वह जमाना था 1977 का। 1977 से गिरते-गिरते ला एण्ड आर्डर की पोजीशन नीचे गई। क्यों गई, उसके लिए मैं ने कुछ अध्ययन किया है और उसका सबसे बड़ा कारण कास्टइज्म का बल बढ़ना है। कास्टइज्म पर विश्वास रखने वाले, कम्युनलइज्म पर विश्वास रखने वाले नेताओं को रेस्पेक्टे-विलिटी मिली और उस रेस्पेक्टेबिलिटी की वजह से लोगों के अन्दर एक यह भावना आई कि कास्टवादी बन कर शोहरत हासिल करें, चाहे वह सस्ती ही शोहरत हो। ऐसी लोकप्रियता को पाने के लिए लीडरी को पाने के लिए कभी एक किनारे जुलूस निकाल दिया और कभी दूसरे किनारे जुलूस निकाला। हमारे देश में यह बीमारी है और अभी लोग कास्ट के नाम पर जुड़ जाते हैं, कम्युनिज्म के नाम पर जुड़ जाते हैं और यह भावना यहां तक चली कि बड़े बड़े मिनिस्टर से ले कर छोटे से छोटे थानेदार तक वह पहुँची और उन्होंने दूसरी

[श्री जैल सिंह]

कास्ट के लोगों को मारना शुरू कर दिया और डाकुओं में भी यह भावना पैदा हुई कि वह अपनी कास्ट के गांव में आ जाए, तो न उस को उसे लूटना है और न वहां के लोगों को उसे पकड़वाना है क्योंकि वे इस को अपना भाईचारा समझते हैं। स्थिति यहां तक आ गई है। इसी तरह से पुलिस में भी कुछ ऐसी भावना है। डाकू ने देखा कि यहां एस० पी० हमारी बिरादरी का है, यहां इंसपैक्टर हमारी बिरादरी का है, तो सोचा कि यहीं रह लो और जब वह बदल जाता है, तो वे वहां से चले जाते हैं। उन को गुस्सा आया तो वे यह देखते हैं कि मारना किस को है। मैंने देखा है कि यू०पी० में भी देखा है और बिहार में भी देखा है, वे कुछ लूटते भी थे और बांटते भी थे। लूटते थे अमीरों को और लूटने के बाद, उसको मारने के बाद फिर वहां उस गांव में पहुँच जाते थे, जहां उन का भाईचारा हो। और उसमें से कुछ बांट भी देते थे।

---

18 hrs.

एक दोस्त ने कहा कि छवि राम को मारने के बाद उनको लोगों ने नेता कहा था। नेता तो एक गिरोह का होता ही है। नेता का मतलब है लीडर। ग्रुप का लीडर भी होता है। डाकुओं का लीडर भी होता है। डाकुओं का वह नेता बन जाता है। संगत होती है। कुसंगत भी हो जाती है। सोसाइटी-सोसाइटी होती है। लेकिन बदकारों की भी हो जाती हैं। बढ़ते-बढ़ते यह बीमारी यहां तक पहुँच गई कि उसको खत्म करने के लिए हमको बहुत बड़ा यत्न करना पड़ा। कुछ भाई कह रहे थे कि अधिकतर यू० पी० में बेदोष लोग मारे गए हैं। मैं नहीं यह कह सकता हूं। लेकिन ईमानदारी से मैं यह कहता हूँ कि जो मारे गए हैं उनको इस ख्याल से नहीं मारा गया है कि वे हरिजन हैं या यादव हैं और उसको हमें मार देना है। अधिकतर लड़ते-लड़ते एक सौ से ज्यादा पुलिसमैन मरे हैं और दो साल में दो हजार डाकू और उनके साथी मरे हैं। उनमें हो सकता है कोई निर्दोष कहीं फंस गया हो और मारा गया हो, लेकिन सरकार की यह नीति नहीं है। आप अन्दाजा लगा सकते हैं कि इतने लोगों को मारने की जरूरत क्यों पड़ी। उसके बाद भी डाकू मौजूद हैं। उत्तर प्रदेश के मुख्य मन्त्री के भाई जो हाई कोर्ट के जज थे और उसका बेटा दोनों मार दिए गए हैं। अभी तक उस मामले की हम जांच करवा रहे हैं कि वह कोई गहरी साजिश का नतीजा था या अचानक वह घटना हुई। कैसे वह हुई इसकी हम जांच करवा रहे हैं। लेकिन हकीकत यह है कि उत्तर प्रदेश के मुख्य मन्त्री ने दिलेरी से डाकुओं का मुकाबला किया है फिर चाहे वह राजपूत हो या यादव हो या किसी और जात का हो। डाकुओं के खिलाफ दिलेरी के साथ उन्होंने कदम उठाए हैं और उनका मुकाबला किया है और इसका मूल्य उनको चुकाना पड़ा है। बजाय इसके कि आप इस बात के लिए उनकी प्रशंसा करें कि ईमानदारी से एक आदमी ने इस बिगड़ी हुई हालत का मुकाबला किया है और कर रहा है और फिर ऐसे मौके पर जबकि उसका भाई और उसका भतीजा मर चुका है, आपको दो चार दिन तो उसके साथ हमदर्दी करनी चाहिए थी। लेकिन आपने तो अभी से उसके खिलाफ शोर मचाने की कोशिश की है उसकी निन्दा करने की कोशिश की है और कह दिया है कि जो खुद भी सुरक्षित नहीं है वह कैसे राज करेगा। यह बात अच्छी नहीं लगती।